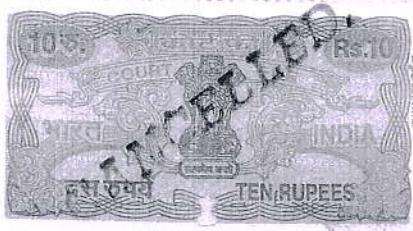


न्यायालयः श्रीमान राजस्व मंडल अवालियर

पुनर्गणना

ता. पैकी

R - 43 - III - 114



लहमन सिंह ठाकुर पिता भगवान सिंह ठाकुर का जीते।

धारा:- बारसान

१. श्रीमति उर्मिला ठाकुर उम्र 35 साल बेवा स्व. श्री लक्ष्मणसिंह ठाकुर

२. अनुकूलसिंह ठाकुर उम्र 14 साल नावार्ड लंग

पिता स्व. श्री लक्ष्मण सिंह ठाकुर वली व वादमित्र माँ उर्मिला ठाकुर

३. कुमारी भूस्कान ठाकुर उम्र 9 साल ना.वा.

४. पिता लक्ष्मण सिंह ठाकुर वली व वादमित्र माँ उर्मिला ठाकुर

५. आद्युष सिंह नावार्ड उम्र 7 साल पिता स्व. श्री लक्ष्मण सिंह

ठाकुर वली व वादमित्र माँ उर्मिला ठाकुर

सभी का साक्षिन ग्राम नंदरई तहसील पथरिया जिला दमोह

— पुनरीक्षण कर्तार्गण

बनाम

सुधाकर राव सपै पिता गोविन्दराव सपै

सा. किन्द्रडो हाल वार्ड नं. १ पथरिया तह. पथरिया

जिला दमोह

— उत्तरवादी

पुनरीक्षण अंतर्गत धारा 50 म.प.भ. रा. सं.

पुनरीक्षण कर्ता गण न्यायालय श्रीमान अनुविभागीय अधिकारी

बहोदय पथरिया जिला दमोह धारा रा. अ.प.क. 233/6 वर्ष 2011-12

में पारित आदेश दिनांक 21.10.2013 से दुष्टि एवं पीड़ित होकर अन्य

आधारों के जलावा निम्न आधारों पर अपनी यह पुनरीक्षण पेश करते हैं :-

∴ पुकरण के तथ्य ∴

१८ / १३ । एकार्थ के तथ्य खंडेय में दम पकार है कि न्यायालय श्रीमान

29.4.2014

* यह निगरानी अनुविभागीय अधिकारी पथरिया द्वारा प्र.क. 23 अ 6/11-12 अपील में पारित अंतरिम आदेश दिनांक 21-10-13 के विरुद्ध म०प्र०भू राजस्व संहिता, 1959 की धारा 50 के अंतर्गत प्रस्तुत की गई है।

2/ आवेदक के अभिभाषक ने बताया कि अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष अनावेदक द्वारा 2 वर्ष 3 माह से अधिक विलम्ब से अपील प्रस्तुत हुई, जिस पर आवेदकगण की आपत्ति स्वीकार न करके अपील समयावधि में मानने में भूल की है इसलिये अनुविभागीय अधिकारी का आदेश दिनांक 21-10-3 निरस्त किया जावे।

3/ आवेदक के अभिभाषक द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार करने एवं अनुविभागीय अधिकारी के अंतरिम आदेश दिनांक 21.10.13 के अवलोकन से पाया गया कि उन्होंने अनावेदक द्वारा प्रस्तुत अपील में हुये विलम्ब को इसलिये क्षमा किया है क्योंकि विचारण न्यायालय में अनावेदक पक्षकार नहीं था। विचार योग्य 'बिन्दु' है कि अनुविभागीय अधिकारी ने प्रस्तुत अपील को समयावधि में मानने में किसी प्रकार की त्रुटि की है ?

1. भू राजस्व संहिता 1959 (म.प्र.)—धारा 47 एवं पुरिसीमा अधिनियम, 1963—धारा 5—पर्याप्त कारण होने में न्यायालय बैवेकिक अधिकारिता का प्रयोग कर विलम्ब क्षमा कर सकता है—उद्घोषणा तथा समन विधि के अनुसारण में नहीं होने पर विलम्ब माफ किया जायेगा।
2. पारेसीमा अधिनियम, 1963—धारा 5 एवं भू राजस्व संहिता 1959(म.प्र.)—धारा 47—सामान्यतः तकनीकी आधार पर मामले के गुणागुण की उपेक्षा नहीं की जाना चाहिये एवं पर्याप्त कारण पाये जाने पर उद्वार-खेल अपनाया जाकर विलम्ब क्षमा करना चाहिये।

कमश : —

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

निगरानी प्रकरण क्रमांक : 43/III/ 2014
अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

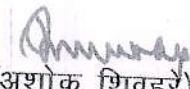
स्थान
तथा
दिनांक

कार्यवाही तथा आदेश

जिला दस्तोह

पक्षकारों एवं
अभिभाषकों
के हस्ताक्षर

3/ उक्त कारणों से अनुविभागीय अधिकारी पथरिया द्वारा
प्र.क. 23 अ 6/11-12 अप्रैल में पारित अंतरिम आदेश
दिनांक 21-10-13 विधिवत् होने से हस्तक्षेप योग्य नहीं है।
अतः निगरानी अमान्य की जाती है। पक्षकार टीप करें।
अधीनस्थ न्यायालय को आदेश की प्रति भेजी जावे। प्रकरण
अक से क्रम किया जाकर रिकार्ड रुम में जमा किया जाय।


(अशोक शिवहरे)

सदस्य
राजस्व मण्डल
मध्य प्रदेश ग्वालियर

क्रमांक
29/4/14